बैंगन की लाभकारी खेती

बैंगन एक महत्वपूर्ण सब्जी है। हमारे देश में इसकी खेती प्राचीनकाल से होती आ रही है। बैंगन को विभिन्न प्रकार की जलवायु में सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है। यही कारण है कि एक वर्ष में बैंगन की तीन फसलें ली जा सकती हैं जिससे किसान कम लागत में बैंगन की खेती कर अधिक लाभ कमा सकते हैं। बैंगन की किस्मों को वानस्पतिक प्रजातियों के आधार पर तीन भागों में विभाजित किया जाता है।

- लंबे फल वाली किस्में जो सरपेंटिनम प्रजाति के अंतर्गत आती है।
- नाशपाती के आकार वाले नीले रंग के फल वाली किस्में जो डिप्रेसम प्रजाति के अंतर्गत आते हैं।
- गोल एवं अंडाकार फलों वाली किस्में जो एस्कुलेंटम प्रजाति के अंतर्गत आती है।

बैंगन का उपयोग सब्जी, पकोड़े भरता और कलौंजी के रूप में किया जाता है। बैंगन में कुछ औषधि गुण भी पाए जाते हैं। यह भूख बढ़ाने वाला, कामोद्दीपक, हृदयबल्य कारक, वात एवं कफ के लिए लाभप्रद होता है। सफेद बैंगन की सब्जी मधुमेह के रोगियों के लिए अत्यन्त लाभप्रद पाई गई है।

जलवायु

बैंगन की खेती के लिए गर्म जलवायु उपयुक्त होती है। बैंगन की फसल पाला सहन नहीं कर सकती। अच्छी उपज के लिए 21-30 डिग्री सेल्सियस तापमान बैंगन की खेती के लिए उपयुक्त होता है।

भूमि

बैंगन की खेती के लिए अच्छे जल निकास वाली बलुई दोमट मृदा उपयुक्त होती है। भूमि का पी.एच.मान 6-7 होना चाहिए।

भूमि की तैयारी

बैंगन की फसल के लिए खेत को तैयार करने के लिए पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करनी चाहिए। इसके बाद 2-3 जुताई हैरो या कल्टीवेटर से करनी चाहिए। अंतिम जुताई के साथ पाटा लगाकर खेत को समतल कर लेना चाहिए।

उन्नत किस्में

किस्म आकार	फल रंग	उपज क्विं/हैक्टेयर
1. अर्का नवनीत	गोल	गहरा बैंगनी 600
2. पूसा संकर-9	गोल	गहरा बैंगनी 560
3. पूसा संकर-6	गोल	गहरा बैंगनी 450
4. एन.डी.बी.एच-6	गोल	गहरा बैंगनी 530
5. अर्का केशव	लम्बी	हल्का बैंगनी 450
6. अर्का कुसुमाकर	लम्बी	हरा 460
7. अर्का नीलकंड	लम्बी	बैंगनी नीला 400
8. पंत ऋतुराज अण्डकार	गोल	बैंगनी 350
9. पूसा बिन्दु अण्डाकार	गोल	बैंगनी 300
10.व्हाइट कलस्टर अण्डाकार	गोल	सफेद 200

बीज दर

बैंगन की खेती के लिए 400-500 ग्राम बीज की पौध एक हैक्टेयर क्षेत्र के लिए पर्याप्त होती है।

बीज उपचार

बैंगनप की फसल में बीज जनित रोगों से सुरक्षा हेतु थीरम या कार्बेन्डाजिम या वीटावैक्स की 2 ग्राम मात्रा से प्रति किलोग्राम बीज को उपचारित करना चाहिए।

बुवाई का समय

बैंगन की बुवाई के तीन प्रमुख मौसम है-

शरद ऋतु फसल

इस फसल के लिए पौधशाला में बीज जून माह के अंत से जुलाई के मध्य तक बोए जाते हैं और रोपाई जुलाई अगस्त में की जाती है।

बसंत-ग्रीष्म फसल

इस फसल के लिए पौधशाला में बीज अक्टूबर-नवम्बर में बोये जाते है और पौध की रोपाई जनवरी-फरवरी में की जाती है।

वर्षाकालीन फसल

इस फसल के लिए पौधशाला में बीज फरवरी मार्च में बोए जाते हैं और पौध की रोपाई मार्च अप्रैल में की जाती है।

पौध तैयार करना

सामान्यतः एक हैक्टेयर क्षेत्र की रोपाई के लिए लगभग 90-100 वर्ग मीटर क्षेत्र में बीज बोना चाहिए। पौधशाला तैयार करने हेतु ऐसे स्थान का चयन करें जहां सिंचाई का उचित प्रबंध हो और जल निकास की उचित व्यवस्था हो। पौधशाला के लिए हल्की दोमट व रेतीली दोमट भूमि सर्वोत्तम मानी जाती है। पौधशाला की मिट्टी को 4-5 बार गुड़ाई करके भलीभांति भुरभरा बना लेना चाहिए। इसके बाद 15-20 सेमी. ऊंची व 1.25 मी. चैड़ी और आवश्यकतानुसार लम्बी क्यारियों का निर्माण कर लेना चाहिए। दो क्यारियों के मध्य 30 सेमी. चैड़ी नाली छोड़ देनी चाहिए। बीज को हमेशा 6-8 सेमी. की दूरी पर बनी पंक्तियों में बोना चाहिए। बीज को 1-1.5 की गहराई पर बोना चाहिए। बीज बोने के बाद 1 सेमी. मोटी गोबर की खाद की सतह से ढ़क देना चाहिए। गर्मी एवं वर्षा ऋतु में पौध 4 सप्ताह में रोपते योग्य हो जाती है। जबकि सर्दियों में 6-8 सप्ताह में पौध रोपने योग्य हो जाती है।

पौध की रोपाई

पौधशाला से पोध निकालने के दो तीन दिन पहले हल्की, सिंचाई कर देनी चाहिए, ताकि पौधे आसानी से जड़ो को क्षति पहुँचाये बिना निकाला जा सके। लम्बे बैंगन वाली किस्मों में पंक्तियों व पौधों की दूरी क्रमशः 60 गुणा 60 सेमी. और गोल बैंगन वाली किस्मों में क्रमशः 75-60 सेमी. दूरी रखनी चाहिए।

खाद एवं उर्वरक

बैंगन की फसल से अच्छा उत्पादन प्राप्त करने के लिए खेत की तैयारी के समय प्रति हैक्टेयर 200-300 क्विंटल गोबर की खाद को खेत में मिला देना चाहिए। इसके अतिरिक्त 100 किलोग्राम नाइट्रोजन, 60 किलोग्राम फॉस्फोरस और 40 किलोग्राम पोटाश प्रति हैक्टेयर देना चाहिए। नाइट्रोजन की शेष आधी मात्रा को दो बराबर भागों में बाँटकर एक भाग रोपाई के 30 दिन बाद और दूसरा भाग रोपाई के 45 दिन बाद उपयोग करना चाहिए।

सिंचाई एवं जल निकास

बैंगन की फसल की सिंचाई कई बातों पर निर्भर करती है जिनमें भूमि की किस्म, फसल उगाने का समय और वातावरण प्रमुख है। आमतौर पर गर्मियों में बैंगन की फसल में 7 दिन के अंतर पर और सर्दियों में 15 दिन के अंतर पर उचित रहता है। प्रायः वर्षाऋतु की फसल को सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है। यदि लम्बी अवधि तक वर्षा न हो तो वर्षा ऋतु में में भी आवश्यकतानुसार सिंचाई करनी चाहिए। कभी-कभी वर्षा ऋतु में अधिक वर्षा होने के कारण खेत में आवश्यकता से अधिक पानी इकट्ठा हो जाता है। यदि ऐसी स्थिति हो जाए तो उस अधिक पानी को खेत से बाहर निकाल देना चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण

बैंगन में दो से तीन निराई-गुड़ाई करनी चाहिए। तथा रसायनिक नियंत्रण हेतु रोपाई से पहले 1.2 ली. पेन्डामेथिलीन के घोल का प्रति हैक्टेयर छिड़काव करना चाहिए।

रोग एवं नियंत्रण

- **आर्द्रपतन:** यह रोग पिथियम, फाइटोप्थोरा, राइजोक्टोनिया नामक फफूँदी की कई प्रजातियों के कारण होता है। यह रोग पौधशाला में लगे पौधों पर लगता है। जिन पौधों में यह रोग लगता है, वे भूमि सतह के पास से ही गलने लगते है। जब तक पौधों का तना इतना मजबूत न हो जाए कि रोग लगने लगता है। नर्सरी में पौधों का मुरझाना और सूख जाना इस बीमारी का मुख्य लक्षण है।

रोकथाम

- पौधशाला की भूमि को उपचारित करना चाहिए इसके लिए कैप्टान या थायरम 3-4 ग्राम प्रति मीटर वर्ग का उपयोग करना चाहिए।
- बीजो को बुवाई से पूर्व वीटावैक्स की 2 ग्राम मात्रा से प्रति किग्रा.बीजो को उपचारित कर बुवाई करनी चाहिए।
- बीज बोने के 10-15 दिन बाद पौधशाला में मेन्कोजेब या कार्बेन्डजिम की 2 ग्राम मात्रा को प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए।

2.छोटी पत्ती रोग

यह रोग माइकोप्लाजमा के कारण होता है। रोगी पौधा बोना रह जाता है। पत्तियाँ आकार में छोटी रह जाती है। पत्तियों का डंठल भी काफी छोटा रह जाता है और वे तने से जुड़ी हुई दिखाई देती है। तने का गाँठ वाला भाग भी छोटा हो जाता है। प्रायः रोगी पौधे पर फल नहीं बनते और पौधे झाड़ीनुमा हो जाते है। यदि इन पौधों पर फल भी लग जाते है। तो वे अत्यन्त कठोर होते है।

रोकथाम

- रोगी पौधों को उखाड़कर जला देना चाहिए।
- लीफ हॉपर से फसल को बचाने हेतु रोगर 0.1 प्रतिशत का छिड़काव करना चाहिए।
- पौधों को रोपाई से पूर्व टेट्रासाइक्लिन के 100 पी.पी.एम. के घोल से उपचारित कर रोपाई करनी चाहिए।

कीट एवं नियंत्रण

शाखा एवं फल बेधक

इस कीट की सूंड़ी चिकनी एवं गुलाबी रंग की होती है। जो नई बढ़ती हुई शाखाओं में छेद करके अंदर के भाग को खाती है। जिसके कारण शाखाएँ मुरझा जाती है और पौधों की बढ़वार रूक जाती है। फल आने पर ये कीट फलों में छेद करके अंदर के भाग को खाते है जिससे ऐसे फल सब्जी के योग्य नहीं रहते है।

रोकथाम

1.कीट ग्रसित शाखाओं और फलों को तोड़कर नष्ट कर देना चाहिए।

2.कार्बेरिल (सेविन 50 प्रतिशत घुलनशील पाउडर 2 ग्राम प्रति लीटर पानी) के घोल का छिड़काव करना चाहिए।

एपीलेकना बीटिल

यह कीट फसल को पौधशाला से ही हानि पहुँचाना आरम्भ कर देता है। इस कीट का शिशु छोटा और लाल होता है। इससे पहले यह पीले रंग का होता है। यह कीट पत्तियों को खाकर छलनी जैसा बना देता है।

रोकथाम

1.यह कीट के नियंत्रण के लिए सेविन 10 प्रतिशत का बुरकाव या साइपरमेथ्रिन के 0.15 प्रतिशत घोल का 15 दिन के अंतर से छिड़काव करना चाहिए।

फलो की तुड़ाईजब फल पूर्ण रूप् से विकसित हो जाए कोमल हो और उनमें रंग भी आ जाए तब उन्हें तोड़ लेना चाहिए। फलों को देरी से तोड़ने पर फल कडोर हो जाते है और उन में बीज भी पक जाते है। फलों का रंग का पीला पड़ जाता है। जिसके कारण वे सब्जी के लिए अनउपयुक्त हो जाते है। आमतौर पर फूल आने के लगभग 8-10 दिन बाद फल तोड़ने योग्य हो जाते है।

उपज

बैंगन की उपज भूमि की उर्वरा शक्ति, बैंगन की किस्म और फसल की देखभाल पर निर्भर करती है। उन्नत किस्मों से 250-300 क्विंटल फल प्रति हैक्टेयर तथा संकर किस्मों से 400-600 क्विंटल फल प्रति हैक्टेयर तक उपज प्राप्त होती है। ■■■